क्रांतिकारी आन्दोलन

बम और पिस्तौल की राजनीति में विश्वास करने वाले क्रान्तिकारी विचारधारा के लोग समझौते की राजनीति मे कदापि विश्वास नहीं करते थे उनका उद्देश्य था 'जान दो या जान लो'। बम की राजनीति उनके लिए इसलिए आवश्यक हो गयी थी क्योंकि उन्हे अपनी भावनायें व्यक्त करने या आजादी के लिए संघर्ष करने का और कोई रास्ता नजर नही आ रहा था। आतंकवादी अधिक शीघ्र परिणाम चाहते थे। वे उदारवादियों के प्रेरणा और उग्रवादियों के धीमे प्रभाव की नीति मे विश्वास नहीं करते थे

क्रांतिकारी आन्दोलन सरकार की दमनकारी नीति के प्रतिक्रियास्वरूप महाराष्ट्र से प्रारम्भ हुआ और बंग-भंग आन्दोलन के बाद बंगाल इस आन्दोलन का मुख्य केन्द्र बन गया। मातृभूमि को विदेशी शासन से मुक्त करने के लिए वे हत्या करना, डाका डालना, बैंक, डाकघर अथवा रेलगाड़ियाँ लूटना सभी कुछ वैध समझते थे बारीन्द्र कुमार घोष तथा भूपेन्द्र नाथ दत्त आतंकवादी आन्दोलन के अग्रदूत माने जाते है। इन दोनों व्यक्तियों ने 'युगांतर' और संध्या नामक क्रान्तिकारी पत्रों के माध्यम से क्रांतिकारी आन्दोलन का प्रचार किया।

यदि यह कहा जाये कि बंगाल ~~आतंकवादी~~ क्रांतिकारी आन्दोलन का गढ़ था तो अतिश्योक्ति न होगी। बंगाल में क्रांतिकारी विचारधारा को बारीन्द्र कुमार घोष एवं भूपेन्द्र दत्त ने फैलाया। 1906 ई० मे इन दोनों युवको ने मिलकर 'युगांतर' नामक समाचार पत्र का प्रकाशन किया। बंगाल मे क्रांतिकारी आन्दोलन की शुरुआत 'भद्रलोक समाज' ने किया। इस समाचार पत्र ने क्रांति के प्रचार मे सर्वाधिक योगदान किया। बारीन्द्र घोष और भूपेन्द्र दत्त के सहयोग से ही 1907 मे 'अनुशीलन समिति' का गठन किया गया जिसका उद्देश्य था 'खून के बदले खून'।

महाराष्ट्र में क्रांतिकारी आन्दोलन को उभारने का श्रेय तिलक के पत्र 'केसरी' को जाता है। 1908 ई० मे बम्बई प्रांत के चार देशी भाषा मे समाचार पत्रों पर सरकार ने कहर ढाया। ~~24~~ 24 जून 1908 को तिलक को फिर गिरफ्तार किया गया और केसरी मे प्रकाशित लेखों के आधार पर पहले तो उन पर राजद्रोह

Scanned by TapScanner

का मुकदमा चलाया गया फिर 6 वर्ष की सजा दे दी गई। बम्बई में इसके विरोध में मजदूरों ने जबरदस्त हड़ताल की जो छः दिनों तक चली।
विनायक दामोदर सावरकर ने 1904 ई॰ में नासिक में 'मित्रमेला' नामक संस्था की स्थापना की जो कि मैजिनी के तरुण इटली के नमूने पर अभिनव भारत में परिवर्तित हो गई। इस संस्था के लोगों ने न्यायाधीश जैक्सन की गोली मारकर हत्या करदी। महाराष्ट्र से महत्वपूर्ण क्रांतिकारी पत्र 'काल' का सम्पादन किया गया।

पंजाब में 'औपनिवेशिक विधेयक' के कारण किसानों में व्यापक असन्तोष था। अकाल, महामारी और सरकार की कृषि सम्बंधी नीति ने पंजाब में विस्फोटक स्थिति पैदा कर दी लाला लाजपतराय, अजीत सिंह और लाला हरदयाल ने किसानों का पक्ष लेकर आन्दोलन चलाया। सरकार ने लाला लाजपतराय और अजीत सिंह को गिरफ्तार कर माण्डले जेल भेज दिया गया।

अंग्रेजी प्रशासन के चंगुल से बचने के लिए क्रांतिकारियों ने विदेशों में रहकर भारत की स्वतंत्रता के लिए लड़ाई लड़ी। 1905 में भारत से बाहर लन्दन की धरती पर श्यामजी कृष्ण वर्मा के द्वारा 'इण्डियन होमरूल सोसायटी' की स्थापना की गई। इसे 'इण्डिया हाऊस' की संज्ञा दी जाती है। इस संस्था का उद्देश्य अंग्रेजी सरकार को आतंकित कर स्वराज्य प्राप्त करना था।

1913 ई॰ में अनेक भारतीय लोगों ने लाला हरदयाल के नेतृत्व में सैनफ्रांसिस्को (अमेरिका) में 'गदर पार्टी' की स्थापना की। विश्व के अनेक भागों में इसकी शाखायें खोली गयी गदर पार्टी ने 1857 के विद्रोह की स्मृति में 'गदर' नामक साप्ताहिक पत्रिका का भी प्रकाशन आरंभ किया।

प्रथम विश्व युद्ध में जर्मनी एवं ब्रिटेन के आमने-सामने होने के कारण जर्मनी ने भारतीय क्रांतिकारियों को आर्थिक एवं अस्त्र-शस्त्र का सहयोग देने के लिए एक 'इंडियन इंडिपेंडेंस कमेटी' की स्थापना की।

आगे चलकर भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद आदि नवयुवकों ने क्रांतिकारी आन्दोलन अग्रसर करने का बीड़ा उठाया। परन्तु 23 मार्च 1931 को भगत सिंह

राजगुरु और सुखदेव को फांसी की सजा दी गयी। द्वितीय

विश्वयुद्ध के पूर्व सुभाषचन्द्र बोस के भारत से पलायन और सिंगा-पुर में आजाद हिन्द फौज की स्थापना ने क्रांतिकारियों के इतिहास में नयी जान ला दी सुभाष चन्द्र बोस ने शहीद-दिवस के अवसर पर सैनिकों को सम्बोधित करते हुए कहा था, "हमारी मातृभूमि स्वतंत्रता की खोज में है तुम मुझे अपना खून दो और मैं तुम्हें आजादी दूंगा। परन्तु द्वितीय विश्वयुद्ध में जर्मनी और जापान की पराजय के बाद सारी आशा निराशा में बदल गयी।

भारतीय राजनीति में आतंकवाद क्रांतिकारी आन्दोलन का स्थान महत्वपूर्ण माना जाता है, क्रांतिकारी आन्दोलन के स्वरूप भारतीय स्वतंत्रता का मार्ग सरल हो गया। भारतीय स्वतंत्रता को अधिक दिनों तक रोके रखना अंग्रेजों के लिए सम्भव नहीं रहा। क्रांतिकारी आन्दोलन के माध्यम से भारत में त्याग और बलिदान का अद्वितीय उदाहरण भारतीय नवयुवकों ने पेश किया।

असफलता के कारण—

(i) केन्द्रीय संगठन का अभाव (ii) लोकप्रियता का अभाव
(iii) अंग्रेजी सरकार की दमननीति (iv) हथियारों की कमी
(v) महात्मा गांधी का भारतीय राजनीतिक में प्रवेश।

क्रांतिकारी आन्दोलन के उदय के कारण—

(i) आर्थिक असन्तोष (ii) लार्ड कर्जन की प्रतिक्रियावादी नीति
(iii) बंग विभाजन, (iv) सांविधानिक साधनों की असफलता।
(v) राष्ट्रीय प्रतिशोध (vi) दमन के विरुद्ध प्रतिक्रिया
(vii) पश्चिमी क्रांतियों का प्रभाव